

Dr•Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja Bahadur Ram Ram Vijay Prasad Singh College Ara
Date; 03/02/2026
Class: U.G Semester - 4th
(MJC-5)
Abnormal Psychology,

Topic -

असामान्य मनोविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (*Historical Background of Abnormal Psychology*)

असामान्य मनोविज्ञान के इतिहास को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है-

(1) प्राचीन विचार/दृष्टिकोण (*Ancient Views*)

(2) ग्रीक तथा रोमन के विचार / दृष्टिकोण (*Greek and Roman Views*)

(3) मध्य युग के विचार (*The Views of the Middle Ages*)

(4) पुनर्जागरण और असाइलम का जन्म (*The Renaissance and the Birth of Asylums*)

(5) उन्नीसवीं सदी (*The Nineteenth Century*)

(6) 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध/प्रारम्भ में (*Early 20th Century*)

(1) प्राचीन विचार/दृष्टिकोण (*Ancient Views*) प्राचीन हड्डियों, कलाकृति एवं खजानों के विशेषज्ञों के विभिन्न अध्ययनों में यह पाया गया है कि प्राचीन संस्कृतियों में सामान्य रूप से यह माना जाता था कि असामान्य व्यवहार बुरी आत्माओं की गतिविधि है। प्राचीन संस्कृतियों के अनुसार अलौकिक, संभावित रूप से दुष्ट, प्राणी उनके साथ तथा उनके आस-पास घटित हो रही प्रत्येक वस्तु के लिए उत्तरदायी थे। उनका मानना था कि अच्छाई एवं बुराई के मध्य संघर्ष के लिए मानव शरीर तथा मस्तिष्क विशेष रूप से महत्वपूर्ण युद्धक्षेत्र हैं। असामान्य व्यवहार बचाव का उपाय एक पीड़ित के शरीर से बुरी आत्माओं को भगाना था तथा इसे बुरी आत्माओं के लिए एक जीत के रूप में माना जाता है।

यूरोप तथा दक्षिण अमेरिका में किए गए एक अनुसंधान में यह पाया गया कि पाषाण युग में ट्रेफिनेशन नामक ऑपरेशन उस अवधि के लोगों की खोपड़ी पर किया गया था जिसने इस दृष्टिकोण का समर्थन किया था। इस ऑपरेशन के दौरान पत्थर के औजार की सहायता से खोपड़ी के एक गोलाकार हिस्से को निकाला गया। यह ऑपरेशन सामान्य रूप से उन लोगों पर किया जाता था, जिन्हें मतिभ्रम होता है, जैसे कि ऐसी चीजें देखना या सुनना जो हुआ ही नहीं था, या विषाद रोग, उदासी का चरम।

स्पष्ट रूप से समस्या के लिए उत्तरदायी बुरी आत्माओं को मुक्त करने के लिए, इस ऑपरेशन द्वारा खोपड़ी के टुकड़े हटा दिए गए थे। इसके अतिरिक्त, आदिवासी युद्ध के दौरान, पत्थर के हथियारों द्वारा लाए गए हड्डी के

टुकड़ों या रक्त के थक्के को हटाने के लिए ट्रेफिनेशन का उपयोग किया गया था। हालाँकि, यह स्पष्ट है कि समाज मानता था कि असामान्य व्यवहार भूत-प्रेत का परिणाम है।

धार्मिक समाजों में, झाड़-फूंक का उपयोग सामान्य रूप से असामान्यता के उपचार के रूप में उपयोग किया जाता था। उनका लक्ष्य या तो बुरी आत्माओं को उनके शरीर को अप्रिय बनाकर मानव शरीर को छोड़ने के लिए मजबूर करना था या उन्हें ऐसा करने के लिए राजी करना था। इस पद्धति में, एक पुजारी प्रार्थना करता है, बुरी आत्माओं से निवेदन/याचना करता है, आत्माओं को बुलाता है, जोर से शोर करता है, या पीड़ित को कड़वा विष पिलाता है। यदि ये झाड़-फूंक असफल होते हैं तो पुजारी और अधिक तीव्र झाड़-फूंक करता है।

(2) ग्रीक तथा रोमन के विचार/दृष्टिकोण (Greek and Roman Views) हिप्पोक्रेट्स (460-377 ईसा पूर्व) के अनुसार, जब शरीर के आवश्यक तरल पदार्थ संतुलन से बाहर होते हैं, तब शरीर तथा मस्तिष्क रोगी हो जाता है। काला पित्त, पीला पित्त, श्लेष्मा तथा रक्त ऐसे ही कुछ तरल पदार्थ हैं। इन तरल पदार्थों की अधिकता का व्यक्ति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है जैसे कि, अतिरिक्त श्लेष्मा थकावट को बढ़ावा देता है, काले पित्त की अधिकता तनाव को बढ़ावा देती है, पीला पित्त चिड़चिड़ापन का कारण बनता है। जबकि रक्त की अधिकता सकारात्मकता, आनंद एवं आत्मविश्वास देती है। दार्शनिकों तथा चिकित्सकों द्वारा असामान्य व्यवहारों के लिए एक हजार वर्षों तक कई प्रामाणिकताएँ दी गईं। हिप्पोक्रेट्स का मानना था कि बीमारियों का उपचार प्राकृतिक कारणों से होता है। उन्होंने असामान्य व्यवहार को आंतरिक स्वास्थ्य समस्याओं के कारण होने वाली बीमारी के रूप में देखा। उन्होंने विचार किया कि इसका कारण एक प्रकार की मानसिक बीमारी है जो चार हामर/देहद्रव, या शरीर के माध्यम से चलने वाले शारीरिक तरल पदार्थ के असंतुलन के कारण होती है। पीला पित्त, काला पित्त, रक्त तथा श्लेष्मा, ये चार देहद्रव हैं। अनियंत्रित गतिविधि, उन्माद पीले पित्त की अधिकता के कारण होता है। काले पित्त के अतिप्रवाह से विषाद-रोग होता है, जो एक अनियंत्रित विषाद है। हिप्पोक्रेट्स ने असामान्य देहद्रव के उपचार में पित्त के स्तर को संतुलित करने के लिए कई प्रयास किए। उनके अनुसार एक शांत जीवन, सब्जियों से भरपूर आहार, संयम, नियमित व्यायाम, ब्रह्मचर्य एवं रक्तस्राव से काले पित्त के उत्पादन को नियंत्रित किया जा सकता है। प्लेटो तथा अरस्तू दो अन्य दार्शनिक थे जिन्होंने इस सिद्धांत का समर्थन किया।

(3) मध्य युग के विचार (The Views of the Middle Ages) रोम के पतन के पश्चात्, चर्च की शक्ति तथा प्रभाव में वृद्धि हुई। लोग व्यवहार को अच्छाई एवं बुराई के मध्य की लड़ाई समझते थे। कौन विजयमान / विजेता विजयी होगा? भगवान या शैतान? बीमारियों, युद्ध तथा शहरी दंगों सहित समस्याओं के लिए शैतान को समाज द्वारा उत्तरदायी ठहराया गया था। बड़े स्तर पर पागलपन का प्रकोप, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने विभ्रम, व्यामोह तथा असामान्य व्यवहार साझा किया। टारेंटिज्म नामक एक अन्य बीमारी में, लोग समूहों में कूदना, नृत्य करना तथा कब्जा करना शुरू कर देते हैं। इन लोगों ने अपने विकार के उपचार के लिए नृत्य किया क्योंकि उन्हें लगा कि टैरन्टुला (बड़े बालों वाली मकड़ी) ने उन्हें काट लिया है। झाड़-फूंक एक बार फिर चलन में आई। बुरी आत्माओं से व्यक्ति को छुड़ाने के लिए, पुजारी याचना, मंत्रोच्चारण या प्रार्थना करने लगे। झाड़-फूंक विफल होने पर लोगों को बुरी तरह से प्रताड़ित किया जाता था। मध्य युग समाप्त होने तक डेमोनोलॉजी (असुरविधा) तथा इसकी प्रथाएँ अब उपयोग में नहीं थीं। मानसिक रूप से बीमार लोगों की सहायता के लिए धर्म को असामान्यता के चिकित्सा सिद्धांतों द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था। इंग्लैंड में, एक व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य का मूल्यांकन करने के परीक्षण को पागलपन / उन्माद परीक्षण के रूप में जाना जाता था। कभी-कभी किसी व्यक्ति के असामान्य व्यवहार को मस्तिष्कीय आघात या किसी के पिता के भय के कारण उत्तरदायी ठहराया जाता था। इस दौरान इंग्लैंड में मानसिक विकारों वाले कई लोगों का चिकित्सा सुविधाओं में उपचार किया गया।

(4) पुनर्जागरण और असाइलम का जन्म (The Renaissance and the Birth of Asylums)

इंग्लैंड के राजा हेनरी VIII ने 1547 में लंदन में सेंट मैरी ऑफ बेथलहम संस्था की स्थापना की, मानसिक बीमारी वाले लोगों को एक अलग सुविधा में आवास की सुविधाप्रारम्भ की गई जिसे असाइलम कहा जाता था। राजा द्वारा स्थापित चिकित्सालय को इसकी भयावह शर्तों के कारण बेदलाम के नाम से जाना जाता था। मध्य युग तथा पुनर्जागरण के दौरान, असाइलम अभी भी व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं। इन शुरुआती अरराइलम स्थलों

की शर्तें भयावह थीं। बीमार लोगों के रूप में माने जाने के बजाए जिन्हें देखभाल की आवश्यकता थी उन्हें समाज पर एक 'भार' के रूप में देखा गया, समाज से पृथक किया गया तथा लगभग उनसे पशुवत् व्यवहार किया गया। यद्यपि कई रोगियों को लाभकारी चिकित्सा देखभाल प्राप्त हुई। शुरुआती असाइलम में शायद ही कभी असामान्य व्यवहार देखा जाता था, हालाँकि इसके बारे में वैज्ञानिक जिज्ञासा थी।

प्रारम्भिक पुनर्जागरण में विज्ञान तथा संस्कृति का विकास हुआ। मानसिक रूप से बीमार लोगों के परिवारों को स्थानीय समुदाय द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान की गई ताकि ये लोग अपने घरों में अच्छी तरीके से स्वस्थ हो सकें। लोगों ने मानसिक उपचार प्राप्त करने के लिए मानसिक बीमारियों से ग्रसित लोगों के लिए प्रेम एवं करुणापूर्ण उपचार के लिए समर्पित धर्मस्थलों में जाने के लिए लंबी दूरी तय की। इस समय, सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं ने भी कोमल देखभाल तथा सम्मानजनक उपचार प्रदान करना शुरू कर दिया। परंतु सोलहवीं शताब्दी के मध्य में देखभाल में ये सुधार समाप्त होने लगे। सरकारी अधिकारियों ने पाया कि चिकित्सा सुविधाएँ बहुत कम तथा थोड़ी थीं, तथा निजी घरों एवं सामुदायिक आवासों में गंभीर रूप से मानसिक समस्याओं वाले लोगों की एक छोटी संख्या ही रह सकती थी, जिसके बाद गिरजाघर एवं अस्पतालों को असाइलम में बदल दिया गया। सबसे पहले उन्होंने रोगियों की अच्छे से देखभाल की। परंतु जैसे-जैसे मानसिक रूप से बीमार रोगियों की संख्या बढ़ती गई, असाइलम जेलों में बदल गए जहाँ लोगों को गंदी स्थिति में रखा जाता था तथा उनके साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार किया जाता था। वर्ष 1547 में लंदन के बेथलहम अस्पताल में रोगियों को जंजीरों से बांधकर उन पर लगातार चिल्लाया गया। पूर्णिमा तिथि के समय उग्र व्यवहार को रोकने के लिए उन्हें जंजीरों से बांधकर पीटा जाता था, जो विडंबना है। इन प्रथाओं के कारण, अस्पताल एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल बन गया। कैदियों के भयानक व्यवहार तथा चीख-पुकार को देखने के लिए अलग-अलग जगहों से लोग आते हैं तथा शुल्क देते हैं। रोगियों को वियना में ल्यूनेटिक्स टॉवर में बाहरी दीवारों से संकरे गलियारे में धकेल दिया जाता था ताकि बाहर के पर्यटक उन्हें देख सकें तथा उनका पर्यवेक्षण कर सकें।

(5) उन्नीसवीं सदी (The Nineteenth Century)

उन्नीसवीं सदी के उपचार में प्रगति देखी गई। ला बिसेट्रे के मुख्य चिकित्सा अधिकारी, फिलिप पिनेल ने कहा कि रोगी ऐसे बीमार लोग हैं जिन्हें करुणा एवं सहानुभूति की आवश्यकता है। रोगी अब अस्पताल के मैदान में स्वतंत्र रूप से घूम सकते हैं, प्रकाशित, हवादार क्वार्टरों का आनंद ले सकते हैं तथा सहायता एवं दिशा-निर्देश प्राप्त कर सकते हैं। पिनेल की रणनीति काफी प्रभावी रही। इस रणनीति के कारण, कई रोगियों जिन्हें वर्षों से अलग रखा गया था, जल्दी स्वस्थ हो गए तथा उन्हें जाने की अनुमति दी गई।

डोरोथिया डिक्स तथा मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान आंदोलन जैसे कई मानवतावादियों के प्रयासों के परिणामस्वरूप, जिसने मानसिक रूप से बीमार लोगों की शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा दिया, 19वीं तथा 20वीं शताब्दी के दौरान संस्थागतकरण में सुधार जारी रहा। 20वीं शताब्दी में जैसे-जैसे मानसिक रोगियों की देखभाल करने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि हुई, मानसिक संस्थानों का भी महत्वपूर्ण विस्तार शुरू नैतिक निर्देशन तथा सम्मानजनक व्यवहार पर बल दिया। मनोवैज्ञानिक समस्याओं वाले शुरू हुआ। नैतिक उपचार ने नैतिक निर्देशन तथा सम्मानजनक व्यवहार पर बोल डाला गया मनोवैज्ञानिक समस्याओं वाले रोगियों को विशिष्ट रूप से उत्पादनसिक बीमारियों वाले गया जो दबाव में अनुत्पादक बन जाते थे। माना जाता है कि मानसिक बीमारियों वाले रोगियों को व्यक्तिगत देखांदा के योग्य माना जाता था। जिसमें उनकी समस्याओं, साहचर्य के बारे में बात करना तथा उपयोगी गतिविधियों एवं प्रदर्शन करने के लिए कार्य करना शामिल था। 1946 में, मैरी जेन वाई ने एक महत्वपूर्ण पुस्तक 'द स्नेक पिट' प्रकाशित की, जो बाद में एक लोकप्रिय फिल्म बन गई। पुस्तक ने उन कठिनाइयों की ओर ध्यान आकर्षित किया जिनका मानसिक रोगियों ने सामना किया तथा इन भीड़भाड़ वाले अस्पतालों में अधिक करुणामय मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की आवश्यकता के बारे में सार्वजनिक चिंता को उजागर किया। शताब्दी के अंत तक मानसिक स्वास्थ्य रोगियों की देखभाल की गुणवत्ता में एक बार फिर कमी हुई थी। जैसे-जैसे मानसिक अस्पतालों की संख्या बढ़ती गई राशि तथा स्टाफ गायब होता दिखाई दिया।

इस समय, मानसिक बीमारियों से पीड़ित लोगों के प्रति पूर्वाग्रह प्रारम्भ हो गया। रोगियों के लिए जनता का विचार बदल गया क्योंकि उनमें से अधिकतर लोग दूरस्थ मानसिक अस्पतालों में गायब हो गए। सार्वजनिक मानसिक

अस्पताल प्रतिवर्ष व्यस्त होते जा रहे थे तथा केवल अभिरक्षी में देखभाल एवं अप्रभावी उपचार की पेशकश कर रहे थे।

20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध/प्रारम्भ में (Early 20th Century)

दैहिक तथा मानसिक विचारों ने ध्यान आकर्षित किया क्योंकि नैतिक आंदोलन अनुकूलतः धीमा हो गया।

(1) सोमेटोजेनिक (**Somatogenic**)- असामान्य व्यवहार को समूहीकृत करने के लिए विभिन्न प्रकार के सिंड्रोम का उपयोग किया जाता था। ग्लोबल पेरेसिस की खोज ने इस मान्यता को जन्म दिया कि स्थिति मानसिक एवं शारीरिक दोनों लक्षणों के साथ एक अपरिवर्तनीय बीमारी है, जैसे कि पक्षाघात (लकवा) तथा भव्यता विभ्रम। सामान्य पक्षाघात की नई समझ के परिणामस्वरूप कई मानसिक बीमारियों के शारीरिक कारणों के बारे में संदेह उत्पन्न हुआ। हालाँकि, जैविक दृष्टिकोणों ने असंतोषजनक परिणाम दिए। भले ही, मानसिक अस्पतालों में रोगियों के लिए विभिन्न चिकित्सा उपचार बनाए गए, परंतु इनमें से अधिकतर अप्रभावी थे। डॉक्टरों ने लोबोटॉमी, हाइड्रोथेरेपी, टॉन्सिलेक्टोमी तथा दांत निकालने का प्रयास किया। सबसे खराब मामले में कुछ समूहों द्वारा कई जैविक सिद्धांतों का उपयोग करके यूजेनिक नसबंदी का अभ्यास किया गया था।

(2) साइकोजेनिक (**Psychogenic**) - इसमें कहा गया है कि असामान्य कार्यप्रणाली मुख्य रूप से मनोवैज्ञानिक कारकों के कारण होती है। ग्रीक तथा रोमन चिकित्सकों के अनुसार, कई मानसिक रोग मनोवैज्ञानिक घटनाओं जैसे भय, प्रेम अस्वीकृति तथा अन्य घटनाओं से उत्पन्न होते हैं। हालाँकि, जब तक सम्मोहन अस्तित्व में नहीं आया, तब तक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्राथमिकता नहीं मिली। रोगी सम्मोहित होने के दौरान अपने समस्याओं एवं मानसिक स्वास्थ्य के बारे में अधिक ईमानदारी से बात करेंगे।

उन्मत्त बीमारियों वाले कुछ रोगियों पर सम्मोहन का उपयोग किया गया, असामान्य शारीरिक बीमारियों के साथ कोई स्पष्ट नैदानिक कारण नहीं था ताकि उन्हें यह व्यक्त करने में सहायता मिल सके कि उन्हें क्या परेशान कर रहा था। मानसिक अस्पतालों में, मनोविश्लेषणात्मक विधि का गंभीर रूप से बीमार रोगियों के उपचार पर बहुत कम प्रभाव पड़ा। इस उपचार के लिए विचारों की स्पष्टता की आवश्यकत होती है जो इन रोगियों में मिलना असंभव है। इसलिए वे इस प्रकार की चिकित्स को संभालने में सक्षम नहीं होते हैं।